موضوع الخطبة : الإيمان بالملائكة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي (@Ghiras_4T)

देवदूतों पर ईमान

प्रथम उपदेश

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ)

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं **सर्वोत्तम** मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- ए मुसलमानो! में आपको और स्वयं को अल्लाह से डरने का प्रामर्श करता हूं, यह पूर्व एवं पश्चात के समस्त समूदायों का प्रामर्श है,अल्लाह का कथन है:

(وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ)

अर्थातःनिसंदेह हमने उन लोगों को जो तुमसे पश्चात पुस्तक दिये गऐ थे और तुम को भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो।

इस लिऐ आप अल्लाह का तक़वा अपनाऐं और उससे डरते रहें,उसकी आज्ञाकारी करें और उसके अवज्ञा से बचते रहें,और जानलें कि देवदूतों पर ईमान लाने का इस्लाम में बड़ा स्थान है,और वह इस्लाम का द्वितीय स्तंभ है,रसूलों (संदेशवाहकों) और अन्य लोगों के मध्य वे माध्यम हैं,देवदूत अल्लाह के ऐसे जीव हैं जो गैब की दुनिया से संबंध रखते हैं,वे अल्लाह की पूजा करते हैं,उनके अंदर **उलूहियत** एवं **रुबूबियत** का कोई गुण नहीं पाया जाता,अल्लाह तआ़ला ने उन्हें नूर(आलोक) से पैदा फरमाया है,उनके अंदर अपना आदेश मानने का संपूर्ण गुण और उसको लागू करने की संपूर्ण **शक्ति** रखी है,अल्लाह का कथन है:

(لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ)

अर्थातःजो आदेश अल्लाह तआ़ला देता है उसका अवज्ञा नहीं करते बल्कि जो आदेश दिया जाऐ पूरा करते हैं।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

(وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ)

अर्थातःजो उसके पास हैं वे उसकी पूजा से न सरकशी करते हैं और न थकते हैं।वे दिन–रात तसबीह बयान करते हैं और थोड़ा भी आलस नहीं करते।

देवदूतों की संख्या इतनी अधिक है कि अल्लाह तआ़ला ही उन्हें गिन सकता है,अल्लाह का कथन है:

(وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ)

अर्थातःतेरे रब के सेनाओं को उसके ऐलावा कोई नहीं जानता।

अर्थातःअल्लाह तआ़ला के ऐलावा कोई उनकी संख्या और घनत्व से अवगत नहीं।
सह़ीह़ैन(बोखारी एवं मुस्लिम) में ह़ज़रत अनस रज़ीअल्लाहु अंहु से मेराज के घटना में यह उल्लेख है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बैते मामूर तक लेजाया गया,आपने(इसके प्रति) जिबरईल से पूछा तो उन्हों ने कहाः यह बैते मामूर है,इसमें प्रत्येक दिन सत्तर हजार देवदूत नमाज़ पढ़ते हैं,जब वे इससे बाहर निकलते हैं तो फिर दोबारा उसमें वापस नहीं होते,यही उन्का अंतिम प्रवेश होता है।1(बोखारी 3207 मुस्लिम 164)

- ऐ मोमिनो! देवदूतों पर ईमान लाने के छह तका़ज़े हैंः

प्रथमः उनके अस्तित्व पर ईमान लाना।
द्वितीयः उनसे प्रेम रखना,जो उनसे शत्रुता रखता है वह काफिर है,अल्लाह का कथन हैः

(مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ)

अर्थातःजो **व्यक्ति** अल्लाह का और उसके देवदूतों और उसके रसूलों(संदेशवाहकों) और और जिबरईल और मीकाईल का शत्रु हो,ऐसे काफिरों का शत्रु स्वयं अल्लाह है।
तृतीयःउनमें से जिनके नाम हम जानते हैं,उनपर ईमोन लाना,जैसे जिबरईल,और जिनके नाम से हम अवगत नहीं,उनपर हम पूर्ण **रूप** से ईमान रखते हैं।

चौथाः उनमें से जिनके **व्यक्तिगत** गुण से हम अवगत हैं,उनपर ईमान लाना,जैसे जिबरईल के गुण/विशेषण जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूचना दी कि आपने उन्हें इस गुण के साथ देखा जिसपर उनकी रचना हुई है,उनके छह सो पंख थे जो आकाश के सारे किनारों को घेरे हुऐ थे।2(बोखारी 3232-3233,और मुस्लिम 174.177 ने इब्ने **मसऊद** रजीअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है।)

देवदूत अल्लाह के आदेश से मानवीय **रूप** भी धारण कर सकता है,जैसा कि जिबरईल अलैहिस्सलाम ने किया,जब अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मरयम के पास भेजा तो वह उनके सामने मानवीय **रूप** में आ ख़ड़े हूऐ,इसी प्रकार जब ह़ज़रत जिबरईल पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आऐ,जबकि आप अपने सह़ाबा के मध्य विराजमान थे,वह आपके निकट ऐसे **व्यक्ति** के **रूप** में आऐ जिसका वस्त्र अत्यंत सफेद और बाल बाल अत्यंत काले थे,उसपर न तो यात्रा के कोई संकेत दिखाई दे रहा था,और न ही

कोई सह़ाबी उनको पहचानते थे,यहां तक कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट जा कर बैठ गऐ,उन्हों ने अपने घुटने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घुटनों से मिला दिया,और अपनी हथेली को आपके जांघों पर रख लिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस्लाम,ईमान,एहसान,क़ियामत और उसकी निशानियों के प्रति प्रश्न किया और आपने उनका **उत्तर** दिया,फिर वे चले गऐ,जब सह़ाबा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनके प्रति पूछा तो आपने फरमायाःवह जिबरईल थे,तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आऐ थे।3(इस ह़दीस को मुस्लिम9 ने उमर बिन अलख़त्ताब से वर्णित किया है।)

इसी प्रकार वे देवदूत जिनको अल्लाह ने इब्राहीम और लूत़ के पास भेजा था वे भी मनुष्य के **रूप** में ही आऐ थे।4(इब्ने ओसैमीन की पुस्तक"शरहो सलासतिल ओसूल":90-91 से थोड़े हेरफेर के साथ लिया गया है।)

देवदूतों के सरदार ह़ज़रत जिबरईल हैं,वे रचना के गुणों में समस्त देवदूतों से बड़े हैं,अल्लाह ने उनका यह गुण उल्लेख किया हैः

(رَسُولٍ كَرِيمٍ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ)

अर्थातःवे एक प्रतिष्ठित संदेशवाहक हैं।जो **शक्ति** वाला है,अ़रश वाले(अल्लाह) के निकट निकट उच्च स्थान है।

फिर फरमायाः

(مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ)

अर्थातःजिसकी (आकाशों में) आज्ञा कि जाती है विश्वसनीय है।

अर्थातःसमस्त देवदूत उनकी आज्ञा मानते हैं और वह **वह्य** के अमीन(रक्षक)हैं।

तथा अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति इस कथन में उनको **शक्तिशाली** जीव बतलाया हैः

(عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَى ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَى)

अर्थातःउसे अति **शक्तिशाली** देवदूत ने सिखाया है जो बलवान है फिर वह सीधा खड़ा होगया।

अर्थात जिसने मोहम्मद को **वह्य** सिखाई वे जिबरईल हैं,अल्लाह ने उनका यह गुण बताया कि वे **शक्तिशाली** हैं,अर्थातः **आंतरिक एवं बाह्य शक्ति** से लैस हैं,अल्लाह के आदेश आदेश को लागू करने पर सक्षम हैं,रसूलों तक **वह्य** पहुंचाने की **शक्ति** रखते हैं,और इस बात पर भी सक्षम हैं कि **वह्य** को शैतानों के उचकने से,अथवा उसमें कोई **बाह्य** चीज शामिल करने से सुरक्षित रखें,यह अल्लाह की ओर से **वह्य** की सुरक्षा ही है कि कि उसने ने इस **वह्य** को इस शक्तिशाली और अमानतदार देवदूत के माध्यम से भेजा।5(देखें उल्लेखित आयतों की व्याख्या शैख अबदूर्रहमान बिन सादी की पुस्तकः"तैसीरूलकरीम अर्रहमान फी तफसीरे कलामुलमन्नान" में।)

अल्लाह तआ़ला का कथनः(ذُو مِرَّةٍ) में مِرَّة का अर्थः **आंतरिक एवं बाह्य** आपदाओं एवं कठिनाईयों से सुरक्षा है,जिससे यह अनिवार्य होजाता है कि वे अपने निर्माण में संपूर्ण और सुंदरता से लैस थे,ये ऐसी **शक्ति** है जिस में स्वास्थ्य और सुंदरता दोनों शामिल हैं।6(ये **इब्नुलकय्यिम** का कथन हैः"एगासतुल्लहफान"2/129,शोधःअलफिक़ही में)

देवदुतों पर ईमान लाने का पांचवा तक़ाजा यह है कि हमें उनके जिन नैतिक गुणों का ज्ञान है,उनपर ईमान लाया जाऐ,जैसे ह़या(लज्जा)का गुण,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है जो आपने उसमान रजीअल्लाहु अंहु के प्रति फरमायाः"क्या में ऐसे व्यक्ति से ह़या न करूं जिससे देवदूत ह़या करते हैं"। 7(इसे मुस्लिम/2401 ने आ़यशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णन किया है।)

देवदूत उन चीजों से घृना करते हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला नापसंद फरमाते हैं,अतः वे उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें **कुत्ता** अथवा प्रतिमा हो,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः"देवदूत उस घर में नहीं जाते जिस में **कुत्ता** हो तथा उसमें भी नहीं जाते जिस में जीवित का प्रतिमा हो"8(इसे बोखारीः3225 और मुस्लिम :2106 ने अबू तलहा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है और उल्लेखित श्ब्द बोखारी के हैं।)

देवदूतों को उन चीजों से भी दिक्कत होती है जिनसे मनुष्यों को दिक्कत होती है,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस **व्यक्ति** को मस्जिद में प्रवेश होने से मना फरमाया जिसने पियाज,अथवा लहसुन,अथवा गंदना खाई हो,अन्य समस्त दुर्गंध चीजों का भी यही आदेश है जैसे सिगरेट, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः"जिसने

पियाज,लहसन तथा गंदना खाया हो,वह हरगिज मस्जिद के निकट न आऐ क्योंकि देवदूत (भी)उन चीजों से तकलीफ महसूस करते हैं जिनसे मनु के संतान तकलीफ महसुस करते हैं"9(इसे मुस्लिमः564 ने जाबिर रजीअल्लहु अंहु से वर्णन किया है।)

छटाःअल्लाह तआ़ला के आदेश से वे देवदूत जो सामान्य और विषेश कार्य करते हैं,उन पर ईमान लाना,सामान्य कार्यों का उदाहरणःअल्लाह की पवित्रता बयान करना और बेगैर किसी उकताहट और आलसा के दिन.रात उसकी पूजा करना,अल्लाह तआ़ला उनके प्रति फरमाता हैः

(فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا)

अर्थातः फिर उनकी जो जिक्र का पाठ करने वाले हैं।

उनमें से कुछ देवदूतों के कुछ विषेश कार्य हैं,जैसे जिबरईल अमीन जो **वह्य** के लिऐ नियुक्त हैं,उन्हें अल्लाह तआ़ला **वह्य** ले कर पैगंबरों व रसूलों के पास भेजते हैं,यह भी संभव है कि अन्य देवदूत भी **वह्य** का कोई भाग ले कर भेजे जाऐं,अल्लाह का कथन हैः

(فَالْمُلْقِيَاتِ ذِكْرًا عُذْرًا أَوْ نُذْرًا)

अर्थातः **वह्य** लाने वाले देवदूतों की कसम!जो(**वह्य**) आरोप उतारने अथवा अवगत करदेने के लिऐ होती है।

अर्थातःवे देवदूत पैगंबरों पर जिक्र(अल्लाह का **वह्य**) उतारते हैं ताकि वे–इसके प्रचार के माध्यम–बहाने को समाप्त करदें,अथवा डराऐं।

एक उदाहरण मीकाईल भी हैं जो वर्षा बरसाने पर नियुक्त हैं।10(यह एक ह़दीस में आया है जिसे नेसाई ने "अलसोनन अलकुबरा":9024 में और अह़मदः1/274 ने इब्ने अब्बस रजीअल्लहु अंहु से रिवायत किया है और "अलमुस्नद" के शाधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है।)

इसी प्रकार वे देवदूत भी जो सूर फूंकने पर नियक्त हैं, प्रसिद्ध है कि उनका नाम इसराफील है,सूर का मतलब वो सूर है जिसमें फूंक मारा जाऐगा,जैसा कि ह़दीस में आया है,यह उस समय होगा जब कयामत होगी और लोग कबरों से उठ खाड़े होंगे।

यह तीन सबसे बड़े देवदूत हैं,और तीनों ऐसी चीज पर नियुक्त हैं जिसमें जीवन है,इस प्रकार जिबरईल **वह्य** पर नियुक्त हैं जिसमें **ह्रदय** का जीवन है,मीकाईल वर्षा पर नियुक्त

नियुक्त हैं जिसमें पृथ्वी का जीवन है,और इसराफील सूर फूंकने पर नियुक्त हैं,जिससे कयामत के दिन(मृत्यु) शवों में जीवन लौट आऐगी।
एक देवदूत मलेकुलमौत हैं,जो आत्मा निकालने पर नियुक्त होते हैं,अल्लाह तआ़ला का कथन हैः

(قُلْ يَتَوَفَّاكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَى رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ)

अथर्तःकह दिजीऐ!कि तुम्हें मौत का देवदूत फना करदेगा जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर तुम सब अपने रब की ओर लौटाऐ जाओगे।
मलेकुलमौत को इज़राईल का नाम देना कुरान व ह़दीस से प्रमानित नहीं है,बल्कि कुरान में उनको मलेकुलमौत से पूकारना प्रमानित है जैसा कि **उपरोक्त** आयत में आया है।
मलेकुलमौत के कुछ सहायक देवदूत भी हैं,अल्लाह का कथन हैः

(وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّى إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ)

अर्थातःवही अपने दासों के **ऊपर** प्रभावी है उच्च है और तुम पर संरक्षक को भेजता है यहां तक कि जब तुम से किसी का मृत्यु हो जाता है,उसकी आत्मा हमारे भेजे हूऐ देवदूत निकाल लेते हैं और वह थोड़ा भी आलसा नहीं करते।इस आयत में (رُسُلُنَا) का मतलब देवदूत हैं,और यही देवदूत मलेकुलमौत के सहायक हैं,और अल्लाह के कथन(لَا يُفَرِّطُونَ) का अर्थ यह है कि उन्हें जो काम व कर्तव्य दिया गया है,उसमें आलसा नहीं करते।
कुछ देवदूत ऐसे हैं जो पृथ्वी में घूमते रहते हैं,वे ज्ञान व जिक्र के सभा की खोज में रहते हैं,जब ज्ञान एवं जिक्र का कोई सभा उन्हें मिलता है तो वे एक-दूसरे को आवाज देते हैं और उस सभा में बैठ जाते हैं और सभा वालों को अपने पंखों से ढांप लेते हैं।11(देखेंःसह़ी बोखारीः6408 और सह़ी मुस्लिमः2689।)
कुछ देवदूतों को मां के कोख में पलने वाले बच्चों पर नियुक्त किया गया है,जब बच्चा मां के कोख में चार महीने का हो जाता है तो उस समय अल्लाह तआ़ला उसके पास एक देवदूत को भेजता है और उसे आदेश देता है कि वह उसकी रोजी,मौत,कर्म और

उसका अच्छा अथवा बुरा होना लिख डाले।12(देखेंःसही बोखारीः3208 और सही मुस्लिमः2643 जिसे **इब्ने मसऊद** ने रिवायत किया है।)

कुछ देवदूतों को मनुष्य के कार्यों को सुरक्षित करने और उन्हें लिखने पर नियुक्त किया गया है,प्रत्येक **व्यक्ति** के साथ दो देवदूत होते हैं,एक उसके दाऐं और दूसरा उसके बाऐं,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

(إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌمَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ)

अर्थातः जिस समय दो लेने वाले जालेते हैं एक दाऐं ओर और एक बाऐं ओर बैठा हुआ है।मूंह से कोई शब्द निकाल नहीं पाता मगर उसके पास संरक्षक तैयार है।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ كِرَامًا كَاتِبِينن يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ)

अर्थातः निसंदेह तुम पर संरक्षक सम्मान वाले लिखने वाले नियुक्त हैं जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।

कुछ देवदूतों का काम यह है कि जब शव को क़बर में रखा जाता है तो वह उससे प्रश्न करते हैं,वह उससे उसके रब,धर्म और नबी के प्रति प्रश्न करते हैं।13(देखेंःअनस बिन मालिक से वर्णित बोखारी की ह़दीसः1374।)

कुछ देवदूत ऐसे हैं जो स्वर्ग वासियों के सेवा के लिऐ नियुक्त हैं,अल्लाह तआ़ला स्वर्ग वासियों के प्रति फरमाता हैः

(وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ)

अर्थातःउनके पास देवदूत प्रत्येक दरवाजे से आऐंगे।कहेंगे कि तुम पर शांति हो,धैर्य के बदले,किया ही अच्छा (बदला) है इस आखेरत का।

कुछ देवदूत नरक पे नियुक्त हैं,उनके सरदार का नाम मालिक है जो नरक का दरोगा है,अल्लाह नरक वासियों के भाषे में फरमाते हैंः

(وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُمْ مَاكِثُونَ)

अर्थातःवे पूकार कर कहैंगे कि ऐ मालिकःतेरा रब हमारा काम ही तमाम करदे,वह कहेगा कि तुम्हें तो(सवैद) रहना है।

एक देवदूत पहाड़ों पर भी नियुक्त हैं,जो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उस समय आऐ जब आप को अपने समुदाय से अत्यंत दुख पहुंची,फिर आपसे कहाःयदि आप चाहैं तो मक्का के दोनों ओर जो पहाड़ हैं उन पर रख दूं, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(नहीं) बल्कि में आशा करता हूं कि अल्लाह तआ़ला इन के वंश से ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो केवल अकेला अल्लाह की पूजा करेंगे और उसके साथ किसी को साझी नहीं करेंगे।14(बोखारीः 3231 और मुस्लिम :1795 ने आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णन किया है।)

कुछ देवदूत बादलों को हांकने पर नियुक्त हैं जो उन्हें अल्लाह के ऐरादे के अनूसार(एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर) हांकते रहते हैं,अल्लाह का कथन हैः

(فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا)

अर्थातःसंपूर्ण रूप से डांटने(बादलों को हांकने)वालों की (कसम!)।

देवदूत मोमिनों(विश्वासियों) से प्रेम करते,उनके लिऐ क्षमा की प्रार्थना करते हैं,अल्लाह तआ़ला अ़रश को उठाने वाले देवदूतों के प्रति फरमाता हैः

(الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ)

अर्थातःअ़रश के उठाने वाले और उसके आस पास के (देवदूत)अपने रब की तसबीह प्रशंसा के साथ साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिऐ क्षमा प्राप्त करते हैं,कहते हैं कि ऐ हमारे रब!तू ने हर चीज को अपने क्षमा और ज्ञान से घेरे रखा है,अतः तू उन्हें क्षमा प्रदान कर जो तौबा करें और तेरे मार्ग पर चलें और तू उन्हें नरक की यातना से बचाले।ऐ हमारे रब!तू उन्हें सवेद वाले स्वर्ग में लेजा जिन का तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप दादाओं और पत्नियों और संतानों में से (भी)उन(सब)को जो पुण्य के कार्य किये हैं।निसंदेह तू तो प्रबल व बुद्धिमत्ता वाला है।उन्हें पापों से भी सुरक्षित रख,सत्य तो यह है कि उस दिन तूने जिसे पापों से बचा लिया उस पर तूने कृपा करदी और बहुत बड़ी सफलता तो यही है।

देवदूत उस व्यक्ति के लिऐ क्षमा का प्रार्थना करते हैं जो मस्जिद में नमाज का इंतजार कर रहा होता है,वे कहते हैं:ऐ अल्लाह!इसे क्षमा प्रदान कर,ऐ अल्लाह इसपर कृपा फरमा।15(इसे **अबूदाऊद**: 469,तिरमिजी:330,इब्ने माजा:799,ने अबूहोरैरा रजीअल्लहु अंहु से रिवायत किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही कहा है।)

देवदूत उस **व्यक्ति** के लिऐ भी क्षमा और कृपा की प्रार्थना करते हैं जो मस्जिद के अंदर प्रथम सफों में नमाज़ पढ़ते हैं,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"अल्लाह तअ़ला प्रथम सफों में आने वालों पर कृपा नाजिल करता है और देवदूत उनके लिऐ प्रार्थना करते हैं"16(इस ह़दीस को **अबूदाऊद**: 674,नेसाई:646,और इब्ने माजा:997 ने बरा बिन आ़जिब रजीअल्लहु अंहु से रिवायत किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही़ कहा है।)

देवदूत उनके लिऐ भी प्रार्थना करते हैं जो लोगों को पुण्य व कलयाण का शिक्षा देते हैं,अबू अमामा बाहेली रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"अल्लाह और उसके देवदूत और आकाश और पृथ्वी वाले यहां तक कि चूंटियॉ अपने बिलों में और मछलियॉ उस **व्यक्ति** के लिऐ जोपुण्य एवं कलयाण कलयाण का शिक्षा देता है,अच्छाई व बरकत का प्रार्थना करती हैं"17(सोनन तिरमिजी:2685)

देवदूत उस **व्यक्ति** पर श्राप भेजते हैं जो अपने मुसलमान भाई पर लोहे का कोई हथियार उठाता है,अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अबूलक़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिसने अपने भाई की ओर लोहे के किसी हथियार से ईशारा किया तो उस पर देवदूत श्राप भेजते रहते हैं यहां तक कि वह उस काम को छोड़दे,चाहे वह उसके सगा भाई ही क्यों न हो"18(मुस्लिम:2616)

देवदूत मोमिनों के साथ फज्र की नमाज़ में उपस्थित होते हैं:

(وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا)

अर्थात: फज्र का कुरान(पढ़) ।निसंदेह फज्र के समय का कुरान पढ़ना उपस्थित किया गया है।

कुराने फज्र का अर्थ नमाजे फज्र है,इसे कुरान इस लिऐ कहा गया है कि उसमें अन्य नमाज़ों की तुलना में लंबी तेलावत करना मशरू (धार्मिक़) है,तथा इस नमाज़ में की

जाने वाली तेलावत का महत्व भी अधिक है,क्योंकि इस नमाज़ में रात और दिन के देवदूत जमा होते हैं।19(यह शैख इब्ने सादी रहिमहुल्लाह ने अपनी व्याख्या में लिखा है,जिसे संक्षेप और हेरफेर के साथ यहां उल्लेख किया गया है।)

सारांश यह कि देवदूतों को अल्लाह ने संसार के कार्यों की तदबीर(संचालन) के लिऐ जिन कार्यों का भार दिया है,वे उन्हें पूरा करते हैं,इसी लिऐ अल्लाह तआ़ला ने देवदूतों को संदेशवाहक व रसूल का नाम दिया है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें जिन कर्तव्यों के साथ भेजा है,वे उन्हें पूरा करते हैं,अल्लाह तआ़ला सुरह फातिर में फरमाता है:

(وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا)

अर्थातःसमस्त प्रशंसाऐं उस अल्लाह के लिऐ पात्र हैं जो (सर्वप्रथम)आकाशों एवं पृथ्वी को पैदा करने वाला है और पंखों वाले देवदूतों को अपना संदेशवाहक बनाने वाला है।

ज्ञात हुआ कि देवदूतों को **वह्य** के साथ,आत्मा निकालने के लिऐ,हवाओं और बादलों को मोसख्खर–अर्थात उन्हें हांकने–के लिऐ और मनु के संतानों के कार्यों को लिखने और उन जैसे अन्य कार्यों को पूरा करने के लिऐ भेजा जाता है।

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह लिखते हैं:देवदूतों का मामला बड़ा उच्च है,वे संसार की तदबीर करने के लिऐ अल्लाह के भेजे हुऐ संदेशवाहक हैं,जैसा कि अल्लाह तआ़ला का कथन है:

(فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا)

अर्थातःफिर काम की तदबीर करने वालों की क़सम!

तथा फरमायाः

(فَالْمُقَسِّمَاتِ أَمْرًا)

अर्थातःफिर काम को बांटने वालियां।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तकों में देवदूतों से संबंधित एतनी सूचनाऐं और एतने प्रकारों का उल्लेख किया है कि उन सब को यहां पर लिखना संभव नही,किंतु उनकी नीशानियां संसार के अंदर मौजूद हैं।20(अलजवाब अलसही लेमन बददला दीनल मसीहः6/25-26)

देवदूतों और उनके कार्यों व कर्त्वयों की महानता ही है कि अल्लाह ने उनकी क़सम खाते हुऐ फरमाया:(فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا)

यह आयत उनकी महानता व श्रेष्ठता का प्रमाण है।

कुछ देवदूत ऐसे हैं जो सवेद अल्लाह तआ़ला की पूजा में लगे रहते हैं,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"निसंदेह आकाश चरचरा रहा है और उसे चरचराने का अधिकार भी है,इसलिऐ कि उसमें चार **ऊंगली** का भी स्थान खाली नहीं है,मगर कोई न कोई देवदूत अपनी पैशानी अल्लाह के दरबार में रखे हूआ है"21(इसे तिरमिजी:2312,इब्ने माजा:4190,अह़मद:5/173 ने वर्णन किया है और अल्बानी ने "अलसही़":1722 में और ''अलमुस्नद'' के शोधकर्ताओं ने ह़सन कहा है।)

मोमिन के लिऐ चिंता का स्थान है कि आकाश एतना विशाल होने के बावजूद पूजारी देवदूतों के लिऐ कम पड़ रही है,पवित्र है वह महान अल्लाह।22(इस विश्य पर अधिक विस्तृत ज्ञान के लिऐ इब्ने अबी अलउज़ ह़नफी ने देवदूतों पर ईमान के अध्याय में अपनी पुस्तक"शरहुल अकीदा अलतहावीया"पृष्ठ संख्या 299-301,प्रकाशक:अलमकतब अलइस्लामी,बैरूत,के अंदर जो बातें लिखी हैं,उन्हें पढ़ें।)

देवदूतों पर ईमान लाने के संबंध से यह मौलिक बातें थीं जो अपके सामने प्रस्तुत की गईं,अल्लाह तआ़ला हमें और आप को कुरान मजीद की बरकतों से माला-माल करे,मुझे और आपको उसकी आयतों और पाज्ञता(बुद्धिमत्ता)

पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाऐ,में अपनी यह बात कहतें हूऐ अल्लाह तआ़ला से अपने लिऐ और आप सब के लिऐ समस्त पापों से क्षमा की प्रार्थना करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وصلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

जान लीजिऐ–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि देवदूतों पर ईमान लाने के बड़े लाभ हैं,जिन में से कुछ यह हैः 23(यह अध्याय इब्ने ओसैमीन की पुस्तक"शरहो ओसूलिस्सलासा"से हलके हेरफेर के साथ उल्लेख किया गया है)

प्रथमःअल्लाह तआ़ला की महानता व **शक्ति** और प्रभुत्व व साम्राज्य का ज्ञान,क्योंकि जीव की महानता,रचनाकार सर्वोच्च अल्लाह तआ़ला की महानता पर साक्ष्य होता है।

द्वितीयःमनु के संतानों के प्रति अल्लाह का प्रदान एवं कृपा पर उसका आभार होना,क्योंकि उसने कुछ देवदूतों को उनकी सुरक्षा करने,उनके कार्यों को लिखने और उनके अन्य नीतियों का पालन करने पर **नियुक्त** कर रखा है।

तृतीयःदेवदूत जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला की पूजा करते हैं,उस पर उनसे प्रेम रखना।

इसके **अतिरिक्त** आप यह भी जानलें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि नेक व आज्ञाकारी आज्ञाकारी मनु के संतान देवदूतों से अधिक उच्च हैं,यह अहले सुन्नत व अलजमाअत का कथन है,क्योंकि मनु के संतान के अंदर स्वाभाविक **रूप** से काम-वासना रखी गई है जिससे वह तुलना करता और उस पर लगाम लगाता है,उसके अंदर नफसे अम्मारह(बुरा भाव)है जो पाप का आदेश देता है,उस''की रगों में''शैतान दौड़ता है जो उसे बहकाता रहता है,देवदूतों के विपरीत,क्योंकि उनके स्वभाव में यह रखा गया है कि वे अल्लाह का आज्ञा मानें और उसके आदेश पर डटे रहें,शैतान उन्हें पराजित नहीं कर सकता,इस लिऐ मनु के संतानों में से जो **व्यक्ति** अल्लाह के आज्ञा पर स्थिर रहे और अपने आप पर काबू रखे वह देवदूतों से अधिक अच्छा है।

अथवा यह भी जान लें कि शाबान के महीने के रोज़े रखना अधिक मुसतहब है,आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित हैः"पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफली रोज़े एतना अधिक रखते थे कि हम कहतेःअब आप कभी रोज़ा नहीं छोड़ेंगे और जब छोड़ देते तो हमें ऐसा लगता कि अब आप कभी नहीं रखेंगे,और मेंने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रमज़ान के **अतिरिक्त** कसी और महीने के पूरे रोज़े रखते हूऐ नहीं देखा।और मेंने आपको शाबान से अधिक कसी और महीने में नफली रोज़े रखते हूऐ नहीं देखा"24(बोखारी 1833,मुस्लिम 1956।)

ह़ज़रत ओसामा बिन ज़ैद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि मेंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहाःऐ अल्लाह के रसूल!मेंने आपको किसी महीने में एतने रोज़े

रखते नहीं देखा जेतने आप शाबान में रखते हैं।"क्या कारण है?"आपने फरमायाः"यह वह महीना है कि रजब और रमज़ान के मध्य आने के कारण से लोग इससे गाफिल रहजाते हैं,जब्कि यह वह महीना है कि इसमें अल्लाह के यहां मनुष्यों के कार्य प्रस्तुत किये जाते हैं।में चाहता हूं कि मेरे कार्य(आमाल)प्रस्तुत हों तो में रोज़े से रहूं"25(इसे अह़मदः 5/201 आदि ने रिवायत किया है और "अलमुसनद"के शोधकर्ताओं नेः12752 इसे ह़सन कहा है।)

- आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाज़िल कर–कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः"तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से शुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गऐ,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंका जाएगा,26 (अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर **नियुक्त** किया गया है,जिसके पश्चात समस्त मुर्दे अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।) उसी दिन चीख होगी,27(अर्थात जिससे दुनियावी जीवन के अंत में लोग बेहोश होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाऐंगे,यह बेहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाऐगा,दो फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा)।इसलिऐ तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है"।28(इसे नेसाईः1373, **अबूदाऊद**:1047,इब्ने माजाः1085 और अह़मः 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने **सही अबूदाऊद** में और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने''ह़दीसः16162 ''के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है।)

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने और अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर, उन्हें उनके प्रजाओं के लिऐ रहमत बना दे।हे अल्लाह!हर जगह मुसलमानों की स्थिती सही करदे।हे अल्लाह तू उनपर होने वाले पीड़ाओं एवं कठिनाइयों को दूर फरमादे,हे अल्लाह!तू हमसे महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं।हे प्रवर्दिगी!हमें दुनिया में नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

६ शाबान १४४२ हिजरी

जूबैल, **सऊदी** अरब

०९६६५०५९०६७६

अनुवादः

फैजुर रहमान हिफजुर रहमान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com